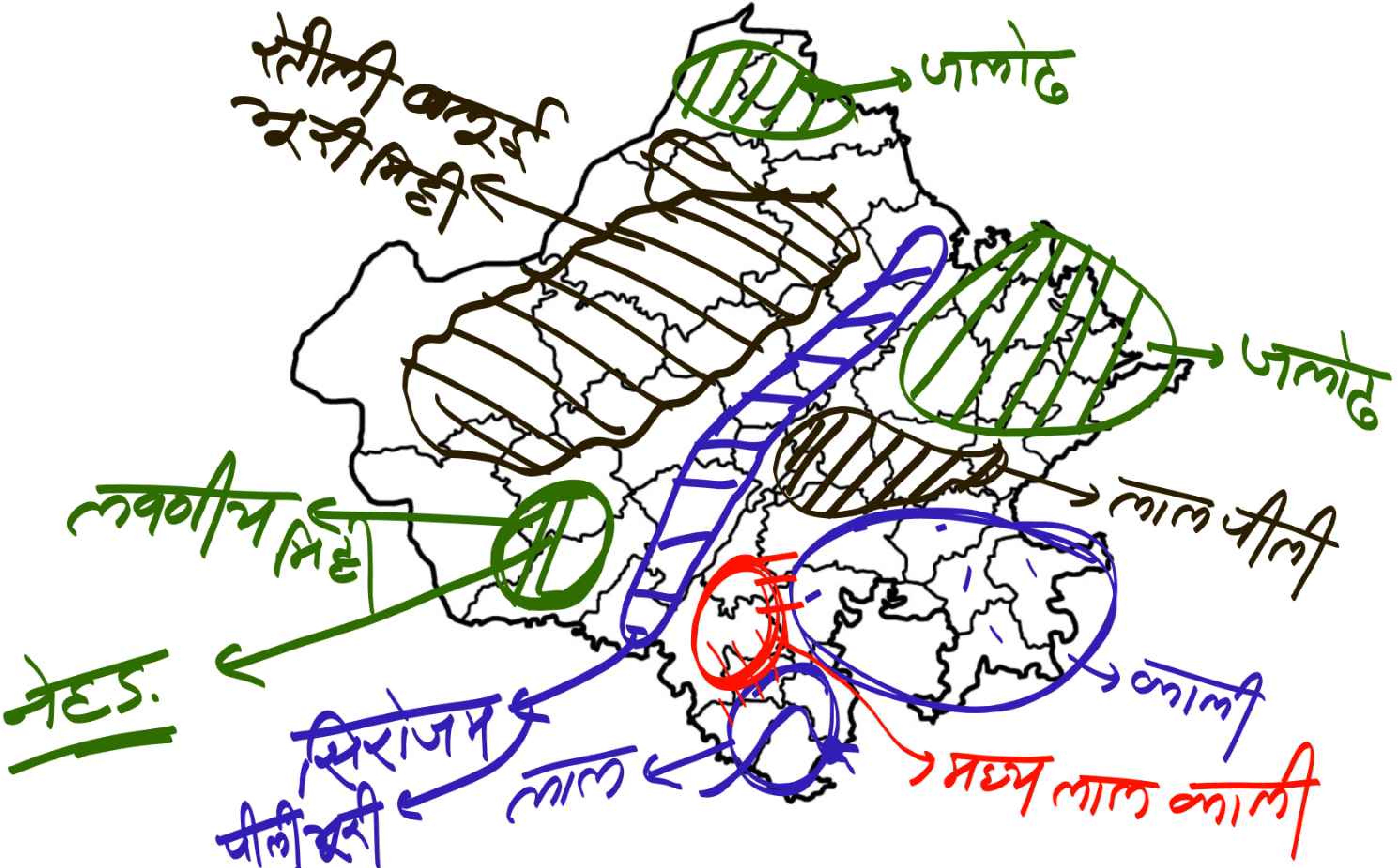
रेतीली बलुई
भूरी मिट्टी
जलोढ़
जलोढ़
लाल पीली
लवणीय मिट्टी
नेहड़.
काली
सिरोजम
पीली भूरी
लाल
मध्य लाल काली

① **रेतीली बलुई मृदा :→**

बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा, जोधपुर, चुरू, डीडवाना कुचामन, झुंझुनू, नागौर

→ कण → बड़े (जल संचयन क्षमता कम)

→ नाइट्रोजन व कार्बनिक पदार्थ - कम

→ लवण, कैल्शियम, फॉस्फेट - अधिक

→ लवणीय मिट्टी → जैसलमेर, बाड़मेर, नागौर, जोधपुर, बालोतरा, जालौर

नोट → सांचौर (जालौर) से बालोतरा के मध्य का क्षेत्र लवणीय मिट्टी के कारण नेहड़ कहलाता है।

② सिरोजम/भूरी रेतीली मिट्टी (पीली)

नागौर, पाली, सीकर, झुंझुनू
सिरोही, डिडवाना कुचामन
- फॉस्फेट - अधिक

③ लाल पीली मिट्टी :→

अजमेर, भीलवाड़ा, टोंक, सवाई माधोपुर
नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, ह्यूमस - कम
लोह ऑक्साइड - अधिक

④ **लाल लोमी मिट्टी :→**

बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, उदयपुर, सलूम्बर, प्रतापगढ़

नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, कैल्शियम - कम

लोह तत्व - अधिक

⑤ **मध्य लाल काली मिट्टी :→**

उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, बाँसवाड़ा

फॉस्फेट, नाइट्रोजन - कम

कैल्शियम, पोटाश - अधिक

⑥ काली मिट्टी / रेगुर मृदा / स्वतः जुताई वाली मृदा :→

कोटा संभाग, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़

→ इस मिट्टी के क्षेत्र को माल भूमि कहते है।
- कण → छोटे (जल संचयन क्षमता सर्वाधिक
→ फास्फेट, नाइट्रोजन – कम
- कैल्शियम, मैग्नीशियम, पोटाश, एल्युमीनियम – अधिक

⑦ जलोढ़ मिट्टी / कछारी मृदा :

पूर्वी राजस्थान, उदयपुर, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर

- चूना, पोटाश – अधिक
- नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, ह्यूमस – कम

④ **पर्वतीय मृदा :-**

अरावली क्षेत्र

उत्पत्ति - अम्लीय

पोटाश, फॉस्फोरस, चुना - कम

⇒ **मृदा के उपभाग**

↳ अमेरिकी भूगोलवेताओ ने राज्य की मृदा को पाँच उपभागो मे विभाजित किया है।

① **एन्टी सोल्स** :→ (पीली भूरी)

- → क्षेत्र - पश्चिमी राजस्थान
- → इस मिट्टी का निर्माण सबसे बाद मे हुआ
- → उपकरण → टोरी सामेन्ट्स, डस्ट फलुवेन्ट्स

② **एरिडी सोल्स** :→ (शुष्क मृदा)

- → शेखावाटी, जोधपुर, फलौदी, नागौर, पाली
- → उपकरण → कैम्बो आरथिड्स, कैल्सी आरथिड्स, सेलोराथिड्स

③ अल्फी सोल्स :→ (जलोढ मिट्टी)
↳ पूर्वी + पुर

④ इनसेप्टी सोल्स :→ (आई मिट्टी)
↳ राजसमंद, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ, झालावाड़, दौसा

⑤ वर्टी सोल्स :→ (काली मिट्टी) → कोटा संभाग, चित्तौड़, भीलवाड़

नोट :→ राज्य मे सर्वाधिक क्षेत्रफल पर एन्टी सोल्स व एरिडी सोल्स मिट्टी का विस्तार है।

प्रमुख तथ्य :→

① मृदा अपरदन को मिट्टी की रेंगती हुई मृत्यु कहते है
② मृदा अपरदन कृषि का कुष्ट या क्षय रोग है
③ अम्लीय मृदा के सुधार हेतु → रॉक फास्फेट
④ क्षारीय मृदा के सुधार हेतु → जिप्सम/चुना
⑤ राज्य की प्रथम मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला - जोधपुर (1958)
II → जयपुर

मृदा का ph मान

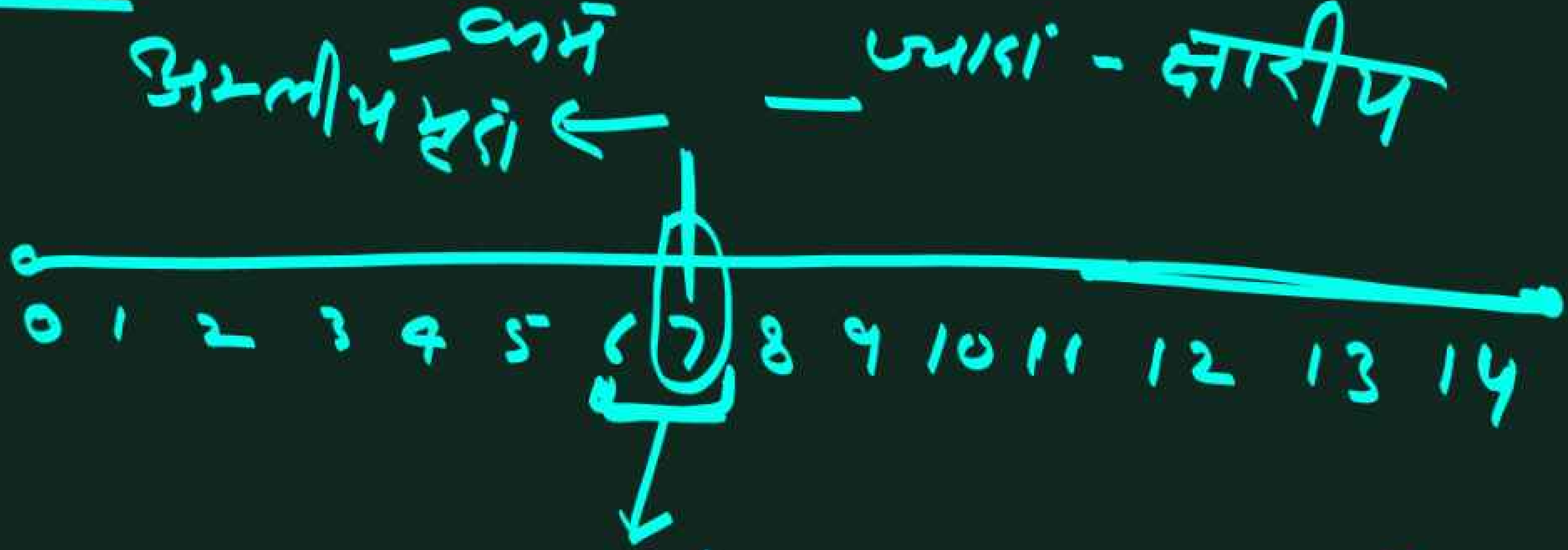

ph 6.5-7.5 के बीच मे हो वह मृदा उपजाऊ मृदा कहलाती

→ कृषि हेतु उपयोग

⑥ केन्द्रीय भू संरक्षण बोर्ड - सीकर, जयपुर

⑦ राजस्व दृष्टि से सिंचित भूमि - चाही (नहरी जमीन)

⑧ असिंचित भूमि — बारानी

⑨ लवणीय मिट्टी - थारा/ मगरा कहलाती है।

⑩ तालाबों या गड्ढो से जल सुखने के बाद की भूमि को पणों कहते है।

⑪ मिट्टी पर जमी सफेद लवणीय बालू = रेह

⑫ मृदा की नमी को मापने का उपकरण - न्यूट्रोन प्रोब/टेन्सीयो मीटर

- → मृदा स्वास्थ्य कार्ड
  - → सूरतगढ़ (श्री गंगानगर)
  - → 19/फरवरी/2015
  - → प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
  - → ध्येय वाक्य - स्वस्थ धरा खेत हरा
  - → केन्द्र 75% : राज्य 25% योगदान
- → तलाई → तालाबों की भूमि
- → डहर → प्राकृतिक सिंचित भूमि

→ राज्य की 7.2 लाख भूमि क्षारीयता व लवणता से प्रभावित है।

⇒ राजस्थान कृषि विभाग ने राजस्थान की मृदा को 14 भागों में विभाजित किया है।

① जिप्सीफेरस मृदा → बीकानेर
② सार्डरोजेक्स मृदा → श्री गंगानगर
③ रेथिरिना मृदा → श्री गंगानगर
④ ग्रे ब्राउन जलोढ मृदा → जालौर, नागौर, अजमेर, पाली, सिरोही
⑤ कैल्सी ब्राउन ग्रे मृदा → बीकानेर, जैसलमेर

⑥ नॉन कैल्सी ब्राउन मृदा :→ सीकर, नागौर, झुंझुनू, जयपुर, अजमेर, अलवर

⑦ मरुस्थलीय मृदा :→ जैसलमेर, बाड़मेर, गंगानगर, जोधपुर, सीकर चुरू, झुंझुनू

⑧ पीली भूरी मृदा :→ भीलवाड़ा, जयपुर, टोंक, सवाई माधोपुर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर

⑨ मरुस्थलीय एवं बालूका स्तूप :→ बाड़मेर, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर

(10) लाल मोम :→ बाँसवाड़ा, डूँगरपुर

(11) नवीन जलोढ़ मृदा :→
अलवर, भरतपुर, जयपुर, सवाई माधोपुर

(12) काली गहरी मृदा :→
भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, हाड़ौती

(13) नवीन भूरी मृदा :→ अजमेर, भीलवाड़ा

(14) पर्वतीय मृदा → कोटा, उदयपुर

→ **राज्य मे मृदा अपरदन के कारण**

1. वनोन्मूलन (वनों की कटाई)
2. जल द्वारा कटाव
3. कृषि का अवैज्ञानिक तरीका
4. जनसंख्या वृद्धि के कारण वनों का कटाव
5. फसल चक्र